

**बगल स्त्री.** (फा.) 1. भुजमूल के नीचे का गड्ढा, काँख 2. छाती के ऊपर दोनों किनारों वाला भाग, पार्श्व मुहा. बगलें झांकना- किसी प्रश्न का उत्तर न दे सकने पर इधर-उधर देखना, बगल में- पास में।

**बगलगंध स्त्री.** (तद्.) 1. एक प्रकार का रोग जिसमें बगल से बहुत ज्यादा दुर्गंध निकलती है 2. बगल या काँख में होने वाला फोड़ा, कँखोरी।

**बगलगीर वि.** (फा.) 1. जो गले मिलता हो, गले मिलने वाला 2. समीप में स्थित या निकटवर्ती।

**बगला पुं.** (तद्.) सफेद या स्लेटी रंग का लंबी टाँग वाला एक पक्षी जो जलाशय या नदी आदि के किनारे शांत खड़ा रहकर मछली को देखते ही झपट्टा मारकर उसका शिकार करता है, इसकी अनेक उपजातियों में से 6 उपजातियाँ मुख्य हैं- 1. आँगन बगुआ 2. निशा बक 3. बगुली 4. बड़े कर वाला सफेद बगुला 5. करछिया 6. गाय-बगुला या सुर्खिया मुहा. बगुलाभगत/बगला भगत- पाखंडी व्यक्ति 2. छली व्यक्ति।

**बगलामुखी स्त्री.** (तद्.) तंत्रशास्त्र की मान्यता के अनुसार एक प्रसिद्ध देवी जिसकी तांत्रिक विधि से साधना होती है।

**बगावत स्त्री.** (अर.) 1. किसी सत्ता या कुशासक के प्रति अवज्ञा 2. अवज्ञायुक्त विद्रोह 3. राजद्रोह 4. विप्लव मुहा. बगावत का झंडा बुलंद करना- राजद्रोह करना, आज्ञा का उल्लंघन करना।

**बगिया स्त्री.** (तद्.) 1. छोटा बाग 2. उपवन 3. फुलवारी, पुष्पवाटिका 4. वाटिका।

**बगीचा पुं.** (तद्.) दे. बगिया स्त्री. बगीची।

**बगुला पुं.** (तद्.) दे. बगला।

**बगूला पुं.** (तद्.) एक ही स्थान पर चक्कर लगाती हुई, ऊपर की ओर उठती हुई हवा, बवंडर, आँधी, चक्रवात, वायु-गोला।

**बगेरी स्त्री.** (देश.) 1. भरुही नाम की एक छोटी चिड़िया जिसकी पीठ भूरे रंग की और पंख सफेद होते हैं 2. बगेड़, बगौधा।

**बगैर अव्य.** (अर.) बिना जैसे- अन्न के बगैर जीवन संभव नहीं।

**बग्घी स्त्री.** (तद्.) 1. चार पहियों की एक घोड़ा-गाड़ी जिसे एक-दो घोड़े खींचते हैं 2. पुराने समय में धनी या सामंत लोगों की सवारी गाड़ी।

**बघंवर पुं.** (तद्.) बाघ की खाल जिस पर संन्यासी जन बैठते हैं या बैठकर साधना करते हैं।

**बघछाला स्त्री.** (तद्.) दे. बघंवर।

**बघनखा वि.** (तद्.) बाघ के नाखूनों जैसे काँटों वाला लोहे आदि का बना एक शस्त्र जो लड़ाई के समय सेनापति या सैनिकों द्वारा हाथ की उंगुलियों में पहना जाता है 2. बघनहा, बघना उदा. शिवाजी ने बघनखा पहनकर ही औरंगजेब के सेनापति अफजल ख़ाँ को मारा था।

**बघार पुं.** (तद्.) 1. बघारने की क्रिया या भाव 2. दाल आदि के बघारने के लिए घी के साथ गर्म किया गया जीरा, अजवायन, मेंथी आदि मसाला, छौंक 3. बघारने के बाद निकली तेज गंध 4. तड़का।

**बघारना स.क्रि.** (तद्.) गर्म घी में जीरा, अजवायन, हींग, मेंथी आदि यथोचित मसाला पकाकर दाल आदि में इस प्रकार डालना जिसमें वह पूरी तरह व्याप्त हो जाए तथा उसकी गंध थोड़ी देर तक बाहर निकलने न पाये, छौंकना, तड़का लगाना लाक्ष. अपनी योग्यता दिखाने के लिए अधिक अनावश्यक शब्दों का प्रयोग करना।

**बघेल पुं.** (देश.) क्षत्रियों या राजपूतों की एक विशेष उपजाति जो प्रायः इलाहाबाद से दक्षिण दिशा की ओर मध्यप्रदेश के रीवां, सतना आदि क्षेत्रों में बसती है इसी कारण इस क्षेत्र का नाम बघेलखंड पड़ा।

**बचकाना वि.** (तद्.) जो व्यवहार समझदार या प्रौढ़ व्यक्ति के अनुसार न होकर बच्चों जैसा हो जैसे- बचकाना व्यवहार स्त्री. बचकानी हरकतें, बचकानी बुद्धि विलो. बुजुर्गाना।